तमाम शिक्षा दार्शनिकों ने शिक्षण को पाठ्यपुस्तक आधारित बनाने के बजाए जीवन अनुभवों से जोड़कर देखने पर जोर दिया है। यह लेख जीवन अनुभवों से सीखने, प्रकृति के साहचर्य में आजादी से पलने–बढ़ने और हस्तशिल्प में कुशलता के माध्यम से स्वावलंबन पर बल देता है। एमहर्स्ट ने शिक्षा सत्र में करवाए जाने वाले कार्यों एवं उनके औचित्य को इस लेख में जीवंतता से प्रस्तुत किया है।

शिक्षा सत्र

एल. के. एमहर्स्ट

पहले विद्यालय पाठ भवन के बाद शांति निकेतन में कुछ सालों तक किए गए प्रयोगों और श्रीनिकेतन में ग्रामीण पुनर्निर्माण के प्रयोग में बिताए दो वर्ष के अनुभव के स्वाभाविक परिणाम के रूप में शिक्षा सत्र विद्यालय शुरू हुआ। यह विद्यालय जिन सिद्धांतों पर आधारित है वे सामान्य बुद्धि से अतीत की सफलताओं और असफलताओं से अर्जित निष्कर्षों तक सीमित नहीं हैं।

बच्चे अपनी सरलता, बढ़ने की क्षमता और अपनी स्वाभाविक उन्मुक्तता के कारण बहुत आकर्षित करते हैं। परंपराओं के दबावों से मुक्त, अपने अंतस् की आवाज से संचालित वे जीवन के क्षेत्र में अपनी ही तरह से शोध करते हैं। अनुभवों से ज्ञान अर्जित करते हुए वे अपार खुशी से भरे रहते हैं जिसे जीवन में कभी फिर से पाया नहीं जा सकता।

यह उन्मुक्त उल्लास, जिसमें जीवन एक निरंतर चलने वाला खेल और संसार किसी परिलोक की तरह नजर आता है, अपने सरलतम रूप में पालतू पशुओं के बछेड़ों में देखा जा सकता है। जैसे, एक बिल्ली के बच्चे को हिलती-डुलती नजर आने वाली हर वस्तु संभावित चूहा नजर आती है, या कुत्ते के नन्हे पिल्ले के लिए घर का कोई भी सामान वर्जित नहीं होता और अपनी स्वाभाविक कोमलता के कारण वे कई बार उसी तरह परेशानी का कारण बनते हैं, जैसे घर में कोई नन्हीं चुहिया। ऐसा लगता है कि कोई अंतःनिहित प्रेरणा होती है, जो उनके विकास को एक खास दिशा देती है, लेकिन जीवन के कठोर अनुभवों के द्वारा उन्हें स्वावलंबन के लिए भी निर्देशित करती चलती है। वे जिंदगी जीने की ऊर्जा से लबालब भरे होते हैं, जो वयस्कों की निगाह में सिर्फ बचपन का अनियंत्रित खिलंदड़पन मात्र भी हो सकता है।

इसी तरह की जीवंतता बढ़ते पेड़ में भी देखी जा सकती है, जिसकी जड़ों से नन्हीं-नन्हीं कोंपलें उन्मुक्तता के साथ ऊपर की ओर फूटती हैं। जीवन का पहिया ऐसे ही चलता है, जिसका मूल पहले प्रस्फुटन के बिंदु में छुपा होता है और फिर तेजी से अणु के साथ अणु जुड़ता चला जाता है, जबकि धरती माता के गर्भ में छुपा भोजन का स्रोत कभी खत्म नहीं होता। यहां तक कि अगर कभी उस मूल स्रोत से भोजन की आपूर्ति रुक भी जाए तब भी जीवन खुली हवा में अपने विकास की नई राह तलाश लेता है। वह तब तक नहीं थमता जब तक कि किसी दुर्घटना में उस पहली कोंपल के फूटने के बिंदु को ही नष्ट न कर दिया गया हो। ऐसे में अन्य शाखाएं जो नष्ट हो गया है उसकी जगह लेने की कोशिश भले ही करें, लेकिन वह अंतःनिहित प्रेरणा, जीवन के प्रति वह उन्मुक्त लालसा कहीं कमजोर पड़ने लगती है।

नन्हे पौधे या पशुओं के नन्हे बछेड़ों की तरह ही इंसानों के बच्चे भी जीवन के प्रति ऐसी ही उन्मुक्त लालसा से लबालब होते हैं और ठीक इसी तरह कोई दबाव उनके भी स्वाभाविक विकास को बाधित कर सकता है, जिससे वे शायद कभी उबर न पाएं। हालांकि बहुत बार माता-पिता बच्चों में

लेखक परिचय

एल. के. एमहर्स्ट प्रसिद्ध कृषि विज्ञानी थे और उन्होंने ब्रिटेन एवं अन्य देशों में ग्रामीण विकास के क्षेत्र में होने वाले अध्ययनों को खासा प्रभावित किया। रवीन्द्रनाथ टैगोर के परिचय में आने के बाद टैगोर द्वारा पश्चिम बंगाल में स्थापित 'ग्रामीण पुनर्निमाण संस्थान' से संबद्ध रहे। वे स्कूल को एक स्व-निर्भर इकाई के रूप में विकसित करने के पक्ष में थे और शिक्षा सत्र के शिक्षाक्रम को भी इसी प्रकार संगठित किया।

स्वावलंबन की क्षमता के विकास को लेकर चिंतित होते हैं, लेकिन यह याद रखना चाहिए कि बचपन में खेलकूद में बिताया जाने वाला समय कभी बेकार नहीं जाता बल्कि, इसका गहरा संबंध भविष्य में उनसे अपेक्षित कठोर परिश्रम से होता है।

अक्सर बच्चों के संदर्भ में सोचते हुए हम यह भूल जाते हैं कि अपने बचपन के खेलों में काल्पनिक ही, सही वह वयस्कों का संसार ही होता था, जिसे हम पाना चाहते थे। याद करने की इसी कल्पनाशीलता के अभाव में हम अपने बच्चों के लिए एक खिलौना संसार रचने को प्राथमिकता देते हैं। जब हम बच्चे थे तब क्या कहीं हमारे मन में यह इच्छा नहीं दबी रहती थी कि हमें भी एक माली की तरह लकड़ी काटने के लिए वास्तविक कुल्हाड़ी मिले, पॉलिश करने के लिए जूते दिए जाएं, आग जलाने के लिए माचिस मिल जाए, या आटा मिल जाए जिसे हम गूंदें या उससे खुद रोटी बनाएं, ..यह वे काम थे जिन्हें करने में हमें अपार खुशी मिल सकती थी, लेकिन क्या हमें भी अक्सर खिलौने वाली ईंटों, खिलौनानुमा उपकरणों या रसोई के खिलौना सामान, के साथ ही संतोष नहीं करना पड़ता था। यदि कभी शारीरिक श्रम से जुड़ा कोई असली काम करने के लिए दिया भी जाता, तो इतने बेमन से कि उसमें हमारी रचनात्मकता के खिलने का कोई अवसर नहीं छोड़ा जाता था।

इसलिए, शिक्षा सत्र का लक्ष्य बच्चों को उसी आजादी के साथ बढ़ने का अवसर देना है जो आजादी एक पौधे की नर्म कोंपल को पेड़ बनने के लिए चाहिए होती है। स्व के विस्तार का वह अवसर देना जिसमें किसी भी नए जीवन को प्रशिक्षण मिलता है और प्रसन्नता भी। बच्चों को बचपन की प्रचुरता को उसकी सरलता और सुंदरता के साथ अनुभव करने देना, रचनात्मक संभावनाओं से भरे अपने आसपास के परिवेश को जीने की पूरी छूट देना, जिसमें वे उन कामों में खेल का आनंद ले सकें जो वास्तव में काम हैं- काम जो जानने का अवसर देते हैं और खेल का आनंद भी।

छह से बारह वर्ष तक की उम्र में कोई भी बच्चा देखकर, सुनकर, सूंघकर और चखकर और खासतौर से स्पर्श कर और अपने हाथों का उपयोग कर सीखता है। इसलिए शिक्षा सत्र में बच्चा हस्त शिल्प और गृह निर्माण की कला के प्रशिक्षणार्थी के रूप में शुरुआत करता है। यहां की कार्यशाला में बच्चा एक कुशल निर्माता और संभावित रचनाकार के रूप में दक्षता और हाथ से काम करने की आजादी हासिल करता जाता है; जबकि घर के एक निवासी के रूप में जिसे बनाने, सजाने और रख-रखाव में वह स्वयं मदद करता है, उसकी ऊर्जा का विस्तार होता है और वह एक छोटे समुदाय के नागरिक के रूप में मुक्त व्यक्ति भी बनता है।

एक बार इन विभिन्न क्षेत्रों में अनुभव प्राप्त करने के बाद बच्चे को स्वयं इनके बीच सामंजस्य, और इनके साथ अपने संबंध को समझने और दर्ज करने की आवश्यकता महसूस होने लगती है ताकि वे अपनी इंद्रियों द्वारा की गई खोजों को देख और समझ सकें और उनके साथ तादात्म्य बना सकें। जब तक बच्चे जीवन की सच्चाइयों और अपेक्षाओं का सघन स्पर्श नहीं पा लेते हैं, तब तक उनसे उधार के तथ्यों और आंकड़ों के आधार पर घंटों एकाग्र होकर किसी ऐसे काम को करते रहने की अपेक्षा रखना निश्चय ही बेमानी होगा, जिससे वे पूरी तरह असंबद्ध हैं और जीवन में अब तक कभी जिससे उनका सामना तक नहीं हुआ है।

शिक्षा-सत्र में गृह-शिल्प शीर्षक के तहत नीचे दिए गए कार्यों को प्राथमिक शिक्षा की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण माना गया है :

कुटीरों की साफ-सफाई और उनका निर्माण

शौचालयों का सही ढंग से इस्तेमाल और वहां से निकलने वाले कचरे का सफाई के साथ निस्तारण

खाना पकाना और परोसना, कपड़े धोना और मरम्मत करना

शरीर की साफ-सफाई और स्वस्थ आदतें

व्यक्तिगत आत्मानुशासन, सामूहिक स्व-शासन

पुलिस, अस्पताल, अग्नि शमन और नियंत्रण

इन सबमें से कुछ कलाओं में दक्षता हासिल करनी होती है, कुछ व्यावसायिक या व्यवस्था संबंधी क्षमताओं को अर्जित करना होता है। कुछ विज्ञान के सिद्धांतों को समझना होता है, और कुल मिला कर इन सबमें व्यक्तिगत स्वावलंबन की जरूरत को पहचानने के साथ ही साथ परिवार के सदस्य तथा एक नागरिक के रूप में अपने कर्तव्यों, जिम्मेदारियों और विशेषाधिकारों को समझने का आह्वान भी है।

जिसे गृह शिल्प कहा गया है वह अपनी प्रकृति में हस्त शिल्प की तरह ही है लेकिन बहुत शुरुआती वर्षों से ही बच्चों को कुछ ऐसे विशिष्ट शिल्प कार्यों से परिचित कराना अच्छा रहता है, जिन्हें उनके नन्हे हाथ आसानी से सीख सकते हों, और जिनका कुछ निश्चित आर्थिक मूल्य भी हो। इससे बनने वाली वस्तु घर में उपयोग आने वाली वास्तविक वस्तु होनी चाहिए, या ऐसी होनी चाहिए कि उसे बाहर बेचा भी जा सकता हो और इस तरह बच्चे को हाथ की कुशलता के अनुभव के माध्यम से स्वावलंबी बनाया जा सकता है।

निम्नलिखित में से किसी को भी महज कुछ सप्ताह में सीखा जा सकता है :

रूई की बाती, टेप या बालों में लगाने के लिए रबर का छल्ला बनाना, स्कार्फ बुनना और बेल्ट बनाना, सूती आसन या दरी बनाना (बच्चे बांस की सहायता से आसानी से खुद अपना लूम बना सकते हैं)

तिनकों से सेंडल बनाना, तिनकों से दरी या चटाई बनाना

सिलाई, कागज बनाना, स्याही बनाना

सब्जियों के रंगों से कपड़े रंगना, लकड़ी के ठप्पों से सूती कपड़े पर छपाई करना

धूप में सुखाई हुई मिट्टी की ईंटें बनाना

बड़े लड़के-लड़कियों के लिए नीचे सुझाई गई गतिविधियां उपयोगी हो सकती हैं :

ऊन के काम करना, भेड़ की ऊन कतरना, धोना, धुनना, रंगना, मोटा कम्बल बुनना, सिलना, रफू करना

मिट्टी के बरतन बनाना, लकड़ी के सामान बनाना या मूर्तियां तराशना, लुहारी का काम और उपकरण बनाना। धूप में सुखाई ईंटों, मिट्टी और फूस से घर बनाना, बांस के घर बनाना और छप्पर बांधना।

दर्जी का काम और सिलाई, मशीन को काम में लेना

घड़ियों की मरम्मत

साइकल साफ करना और मरम्मत करना

ब्लॉक बनाना, कम्पोजिटर का काम करना, टंकण करना, नकल उतारना, प्रिंट बनाना

वाद्य यंत्र बनाना, ढोल, बांसुरी या एक तार का साज बनाना

भोजन की तैयारी, गेहूं या अनाज पीसना, तेल निकालना, रस निकालना, साबुन बनाना

इन सभी शिल्प कार्यों को करने में भी कुछ कला, कुछ विज्ञान और व्यवसाय के कुछ घटक तो शामिल होते ही हैं। इन सब में से कोई भी एक शिल्प स्वावलंबन की उस अंतिम कठिन राह पर आगे बढ़ने का रास्ता खोल सकता है और उन्हें भविष्य में आर्थिक रूप से समर्थ बनने का आत्म-विश्वास प्रदान कर सकता है। कुशल हाथों के द्वारा जीविकोपार्जन के लिए जूझने की सामर्थ्य देने वाले आत्म-विश्वास के बिना उस आत्मिक आजादी को प्राप्त नहीं किया जा सकता जो जीवन का भरपूर आनंद उठाना सिखाती है।

यहां बताए गए कुछ शिल्प ऐसे हैं जो ग्रामीण जीवन से कुछ हद तक उतनी सघनता से संबद्ध नहीं हैं। इनमें से प्रत्येक के साथ प्रक्रियाओं का ऐसा व्याकरण जुड़ा है जिसे सीखने की जरूरत होती है, लेकिन यह ऐसा व्याकरण है जो जीवन से असंबद्ध नहीं है और जिसे शुरुआत से ही कोशिश और गलतियां करते हुए और असफल होने के कटु अनुभवों से गुजरते हुए सीखना होता है। किसी भी कुशल शिल्प के बनने के दौरान कुछ अपशिष्ट हमेशा बचा रहा जाता है और खासतौर से कक्षाओं में बहुत बार मूल कार्य जिसे करने की शुरुआत की थी उसे भुला दिया जाता है और यही अपशिष्ट अंत में बचा रह जाता है।

सभी कार्यशालाओं की तुलना में प्रकृति की कार्यशाला सबसे ज्यादा बड़ी और सबसे ज्यादा मददगार भी है। खुली प्रकृति के बीच कुशल लोगों की प्रेरणा और निगरानी में जीवन की प्रयोगशाला में प्रयोग करने और अनुभव हासिल करने के लिए अपार संभावनाएं छुपी हैं। शिक्षा सत्र में स्कूल मास्टर एक जगह पर खड़ा हो कर शिक्षार्थियों पर हुक्म नहीं चला सकता और परीक्षाओं में कम अंक देने के नाम पर उन्हें धमका नहीं सकता। यहां वह बच्चों के पीछे चलने की अपनी भूमिका को स्वीकार करने के लिए विवश हो जाता है, जहां उसे हर समय निगरानी के लिए तैयार, सलाह और प्रोत्साहन भरे शब्दों के साथ हर क्षण मदद के लिए तत्पर और हर समय स्वयं सीखने के लिए तैयार रहना होता है। वह कभी बच्चों की राह में रुकावट नहीं बन सकता। प्रकृति बेहतरीन अध्यापक है और वह शिक्षार्थियों को उनकी क्षमता और अवलोकन की सामर्थ्य के अनुसार ही पुरस्कृत भी करती है। यहां जब शिक्षार्थी असफल होता है तो इसमें शिक्षक की असफलता भी निहित होती है और वह इस असफलता की जिम्मेदारी बच्चे की किसी अक्षमता के माथे नहीं डाल सकता।

सभी कार्यशालाओं की तुलना में प्रकृति की कार्यशाला सबसे ज्यादा बड़ी और सबसे ज्यादा मददगार भी है। खुली प्रकृति के बीच कुशल लोगों की प्रेरणा और निगरानी में जीवन की प्रयोगशाला में प्रयोग करने और अनुभव हासिल करने के लिए अपार संभावनाएं छुपी हैं। शिक्षा सत्र में स्कूल मास्टर एक जगह पर खड़ा हो कर शिक्षार्थियों पर हुक्म नहीं चला सकता और परीक्षाओं में कम अंक देने के नाम पर उन्हें धमका नहीं सकता।

खुले में किए जाने वाले कुछ शिल्प निम्नलिखित हो सकते हैं, जिन्हें छोटे बच्चों के साथ काम में लाया जा सकता है, जो आर्थिक दृष्टि से लाभप्रद होने के साथ ही साथ जीवन से गहरे जुड़े हैं और उनकी परिवार और समूह के लिए भी भरपूर उपयोगिता है :

मुर्गी पालन, चूजे पालना और अंडों का उत्पादन

ईंधन और जल आपूर्ति की निगरानी करना

बीजों की क्यारियां बनाना और पौधों में खाद डालना

फूल और सब्जियां उगाना

सिंचाई और पानी की निकासी, लकड़ी काटना और जंगल की सफाई

उसमें जैसे-जैसे बच्चे की क्षमता का विकास होता है और उसके अनुभव का दायरा बढ़ता जाता है, एक समय के बाद स्वाभाविक रूप से उस व्याकरण को जानने की मांग पैदा होने लगती है जो उसके कार्य के लिए ज्यादा सटीक अवलोकन, ज्यादा उपयुक्त हस्तक्षेप, ज्यादा उपयोगी जानकारियां प्राप्त करने के लिए जरूरी है। साथ ही उसी क्षेत्र में काम करने वाले उन सहकर्मियों के साथ संवाद कायम करने की इच्छा भी बलवती होने लगती है जिनके अनुभव और विचार, संघर्ष और दृष्टिकोण किताबों में दर्ज हैं- ऐसी किताबों में नहीं जिन्हें पढ़ना एक बोझ की तरह हो बल्कि उन किताबों में जो इसी तरह के काम में नया प्रवेश करने वाले अपने साथियों के लिए मानवीय जानकारियों के नए और व्यापक फलक को खोलती हैं।

भारतीय ग्रामीण बच्चे पहले से ही पारिवारिक जीवन में अपनी भूमिकाओं को निभाने के अभ्यस्त होते हैं, जैसे गायों को चराने ले जाना या उन्हें चारा-पानी देना आदि काम वे करते हैं। घर के परिसर में ही एक छोटा-सा बगीचा भी यदि बच्चे को मिल जाए जिसकी उसे पूरी तरह खुद देखभाल करनी है तो उसे अनुभव से सीखने का पूर्ण और व्यापक आधार मिल जाएगा। इस तरह शिक्षा सत्र में व्यक्तिगत जमीन का टुकड़ा लड़कों और लड़कियों दोनों के लिए उनके पढ़ने, लिखने और उनके अधिकांश गणित के ज्ञान के भी आधार की तरह काम करता है।

पहली बार से ही बच्चे को यह मालूम होना चाहिए कि उसकी जमीन का यह टुकड़ा उसके खेल का मैदान भी है और उसका प्रायोगिक खेत भी जहां उसे बीज लगाने से लेकर फसल की देखभाल करने और उसकी कटाई तक की सभी जिम्मेदारियों का निर्वाह करना है ताकि वह ऐसी पैदावार उगा सके, जिससे कुछ लाभ कमाया जा सकता हो। इस तरह की व्यवस्था कक्षा, पाठ्यपुस्तकों और औपचारिक प्रयोगशाला से कहीं आगे ले जाती है। यहां बगीचे की जमीन है, पौधों के लिए छप्पर है और कार्यशाला है। पढ़ने-लिखने का भी दिलचस्पी के साथ प्रशिक्षण मिलता रहे, इसके लिए फसल का रिकॉर्ड रखा जाता है, हिसाब-किताब दर्ज किया जाता है और समय-समय पर उसे दुरुस्त भी किया जाता है। जमीन के उपजाऊपन का अध्ययन भूविज्ञान होता है। सभी तरह की खादों, छिड़कने वाली दवाओं और कीटनाशकों का उपयोग रसायन शास्त्र, उपकरणों, पानी देने वाले पम्पों और तेल वाले इंजिन आदि का अध्ययन भौतिकी, पौधों का कीड़ों-मकोड़ों (चींटियों, लटों, भृंगियों आदि) और बीमारियों (पत्तियों का सिकुड़ना, कुम्हलाना या जीवाणु लगना आदि) से बचाव कीट विज्ञान और चिड़ियों का इन सबसे संबंध पहले अपने बगीचे में और फिर इस दुनिया में उनके लिए पक्षी विज्ञान के अध्ययन का अवसर प्रदान करता है।

शिक्षा सत्र में पर्यावरण-अध्ययन जैसे किसी अमूर्त विषय के लिए कोई जगह नहीं है। यहां प्रकृति का जीवन से अलगाव नहीं है जिसे शहरों में बैठे उस शिक्षा बोर्ड से जीवन प्राप्त करने की जरूरत पड़े, जो अपनी पाठ्यपुस्तकों को ध्यान में रखते हुए पर्यावरण संबंधी प्रश्नावलियां तैयार करता है और अपने परीक्षा परिणामों की सहूलियत की दृष्टि से पुरस्कार बांटता है। जैसे जीवन में बच्चे को मच्छरों के काटने, कीड़े-मकोड़ों और चींटियों के काटने, टाइफाइड, चेचक या हैजा के कीटाणुओं के आक्रमण से स्वयं जूझना पड़ता है। उसी तरह वह प्रकृति की ताकतों के द्वारा अपने पेड़-पौधों और अपने पशु-पक्षियों पर किए जाने वाले हमलों से भी जूझता है। इस तरह प्रकृति का अध्ययन प्रकृति के जीवन और जीवन के रोजमर्रा के अनुभवों के साथ संबंध के संदर्भ में बदल जाता है।

शिक्षा सत्र में हम लगभग अनायास ही मानव सेवा और नागरिकता के एक ऐसे क्षेत्र में प्रवेश कर गए जिसके साथ कुछ विशेषाधिकार जुड़े थे तो जिससे जन कल्याण की जिम्मेदारी भी जुड़ी थी। बच्चों की गतिविधियों के माध्यम से कुछ ही महीनों में थोड़े-से प्रशिक्षण और अनुभव के द्वारा भारतीय ग्रामीणों की 75 प्रतिशत स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं को हल कर लिया गया। अनुभव को आत्मसात करने, प्रयोग करने और कठोर तथ्यों से सीखने की उनकी तत्परता ऐसी है कि बच्चे स्वाभाविक रूप से उन वयस्कों की शिक्षा के प्राथमिक वाहक बन गए जो अपनी परिवार के लिए रोजी-रोटी कमाने की महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी के निर्वाह में लग जाने के कारण प्रयोग करने के रोमांचपूर्ण संसार में कदम रखने से भी वंचित रहे और इस बात की पूरी संभावना है कि वर्षों की कड़ी मेहनत और संघर्षपूर्ण जीवन के दौरान वे कल्पनाशीलता के उस प्राथमिक उपकरण को भी भुला चुके होते हैं जिसके बिना प्रयोगशीलता असंभव है।

वास्तव में पिछली दो पीढ़ियों से जो गांव पूरी तरह निराशा के दलदल में धंसे हुए थे, उन्हें हमारे आसपास के बच्चों ने फिर उम्मीद

और नए जीवन से सराबोर कर दिया। बच्चों को अस्वाभाविक ढंग से बैंचों पर बांध कर उनके जेलर की मर्जी पर छोड़ देने वाले गांव के पंडित को हमने उसके हाल पर छोड़ दिया। बच्चों का प्राथमिक उपचार कराया और हमें माता-पिता का भरोसा प्राप्त हुआ। हमारे सरल खेलों में बच्चों को आनंद आने लगा और इस तरह हमें उनका भरोसा भी मिला।

गांव में लगी आग को बुझाने के असंगठित वयस्कों के विफल प्रयासों के बीच बच्चों का प्रशिक्षण उस फायर ब्रिगेड की तरह सामने आया जो आपातकाल में कठोर परिश्रम, अनुशासन और अपने नेता के आदेश को मानने के तात्कालिक महत्त्व को समझता है। गांव के 90 प्रतिशत परिवार मलेरिया की चपेट में थे और तब इसी जीवट के साथ गांव का, इसकी टंकियों, घरों, गड्ढ़ों, नालियों आदि का नक्शा खींच दिया गया और तब जलमार्गों की खुदाई की गई- यह दरअसल भूगोल का ज्यादा पूर्णता के साथ अध्ययन था। कोई रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान, जीवाणु विज्ञान या शरीर विज्ञान नहीं- बल्कि एनोफेलीज का अध्ययन, टंकियों में केरोसीन का छिड़काव, कुओं को संक्रमणमुक्त करना, बीमार लोगों का पंजीकरण कराना और उनके स्वास्थ्य का रिकॉर्ड रखना।

एक मेला लगा जिसमें निःशुल्क पुलिस की भूमिका निभाए जाने की आवश्यकता थी और हमारे लड़कों ने, जिनमें से बहुत तो बच्चे ही थे, इस भूमिका का निर्वाह किया। वहां लेटरीन खोदे जाने थे और उनकी नियमित निगरानी की जरूरत थी, ठेलागाड़ियों को खड़े करने की व्यवस्था की जानी थी, जलाशय की निगरानी करनी थी और पूरे इलाके की रोजाना सुबह सफाई की जानी थी। प्राथमिक उपचार, सहानुभूति और दया, सावधानी और सतर्कता, और इन सबके पर्यवेक्षक के लिए लगातार सावधान रहने, खुद पीछे रहते हुए शेष सभी को ऊर्जा और प्रोत्साहन देते रहने की अपेक्षा थी- इससे इस इलाके में युवाओं का एक ऐसा आंदोलन खड़ा हुआ जो अपने गांव की निगरानी और देखभाल की जिम्मेदारी खुद उठाने के लिए तैयार था, ताकि गांव में स्वास्थ्य, शिक्षा और अन्य नागरिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए ज्यादा से ज्यादा महत्त्वाकांक्षी योजनाएं बन सकें और उनके लिए सहायता राशि प्राप्त की जा सके।

ताजा सब्जियों के अभाव और खाद की अस्वास्थ्यकर बरबादी ने घरेलू बागबानी और घर के परिसर में छोटे बगीचों की योजना को जन्म दिया। वयस्कों को नई फसलें उगाने के लिए मनाने के प्रयास विफल हो चुके थे क्योंकि सिर्फ ऐसे ही किसान नए प्रयोगों को आजमाने के लिए तैयार थे, जो किसी भी तरह से खेती में सफल नहीं हो पा रहे थे। वे कुछ समय के लिए किसी भी नए प्रयोग को आजमाने के लिए तैयार थे, जबकि सफल किसान अपनी अपेक्षा के अनुरूप परिणाम हासिल होने तक इंतजार करना बेहतर मानते थे। इधर बच्चों के द्वारा किए गए प्रयोग यदि सफल नहीं भी होते हैं तो माता-पिता उन पर ज्यादा ध्यान नहीं देते हैं, बच्चे मानकर उन्हें नजरअंदाज कर दिया जाता है। यदि बच्चों के प्रयोग सफल हो जाते हैं तो वयस्कों में उनका अनुकरण करने की प्रवृत्ति देखने को मिलती है। इस तरह के अवसरों ने नए स्वास्थ्य, नए जीवन और नई आजादी को हासिल करने की दिशा में रास्ता खोल दिया और इसकी पहल करने वाले बच्चे स्वयं थे।

हमारी शिक्षा ने अब तक प्रकृति के मूल नियम, जीवन के स्वाभाविक चक्र की बहुत उपेक्षा की है। जहां प्रकृति प्रत्येक विकासशील जीव के आत्मनिर्भर बनने में लगने वाले समय को कम से कम रखना चाहती है। वहीं हम स्कूल और कॉलेज के माध्यम से इस समय को अनंतकाल तक बढ़ाते जाने पर जोर देते हैं।

कार्यशाला से बगीचे, बगीचे से खेत और मैदान, खेत से आस-पड़ोस और इस तरह भ्रमण, तीर्थाटन और शिविरों से होते हुए बच्चे जीवन के व्यापक क्षेत्र में उतरते हैं। उदाहरण के लिए, हमारे आसपास लगभग 2 मील की दूरी के क्षेत्र में हमारे रोजमर्रा के जीवन से गहरे जुड़ी सभी गतिविधियां होती रहती हैं, जिन्हें हम कभी बहुत महत्त्व नहीं देते और इस कारण वे हमारे शैक्षणिक कार्यक्रमों से बाहर छूटी रहती हैं :

डाक घर और तार व्यवस्था
पुलिस थाना और स्थानीय कारागार
स्थानीय अदालतें और डिस्पेंसरी
स्टेशन और माल गोदाम
चावल और तेल की मिलें
लोहारखाना और छकड़ा बनाने वाले
बढ़ईगिरी और लकड़ी की टाल
पलेदा और ठठेरे
घरेलू बुनाई उद्योग
घड़ीसाज और सुनार
मोची और दर्जी
ईंट भट्टे

इन सबमें कुछ कला, कुछ विज्ञान और कुछ व्यवसाय के घटक हैं।

कुछ ऐसे उपकरण हैं जिनका इस्तेमाल सीखना होता है और कुछ ऐसे लोग होते हैं जिनके साथ काम किया जाता है। प्रत्येक क्षेत्र कल्पनाशीलता के उद्दीपन के लिए व्यापक फलक को खोलता है। प्रत्येक में संयोजन और आकस्मिकता के लिए भरपूर जगह है और सभी भविष्य में गंभीरता के साथ काम में लिए जाने की संभावना से पूर्ण हैं। पुलिस, सजा और अनुशासन के तौर तरीकों के साथ जान-पहचान के द्वारा ही कानून की भूलभुलैया को समझा जा सकता है और घर में सतर्क निगरानी के साथ इन सारी चीजों के बारे में बताया जाना ही इस बारे में जानकारी के लिए उपयुक्त स्थान है।

संस्थान के नाम पर संस्थान बनाना बच्चों को यथार्थ जीवन से दूर ले जाता है। शिक्षा तभी अर्थवान है जब वह बच्चों को वयस्क जीवन के तमाम पहलुओं को स्वयं अनुभव करने का अवसर उपलब्ध कराए। स्कूल को महज ऐसी प्रयोगशाला नहीं होना चाहिए जहां ज्ञान को अलग से संचित किया जाता हो ताकि उसे बच्चों को दिया जा सके बल्कि उसे आध्यात्मिक अमूर्तन और जन कल्याण से संबंधित दुनिया के यथार्थ में वास्तविक अर्थव्यस्था और स्वालंबन, आत्मानुशासन और स्व-शासन, और स्व की अभिव्यक्ति का रोमांच महसूस कराने वाली प्रयोगशाला होना चाहिए।

अपने आसपास में अपनी सेवाएं देने के कार्य से बच्चों को अलग रखकर उन्हें घर में होने के उस अहसास से वंचित कर दिया जाता है जहां बहुत सारी सेवाओं को व्यक्ति अपना अधिकार मानता है। बल्कि अधिकांश स्कूल बच्चों में प्रतिस्पर्द्धा की भावना को बढ़ावा देने के नाम पर उन्हें स्वयं अपनी या अपने साथियों की मदद करने से भी रोकते हैं। दरअसल ऐसे ही आत्म-केंद्रित संस्थान, जिनका एकमात्र सरोकार खेलों या छात्रवृत्तियां हासिल करने में खुद अपनी सफलता, छात्रों की संख्या या बिल्डिंग के आकार को लेकर स्वयं अपनी कमाई को बढ़ाना होता है, और जो इसी तरह की भावना से भरे अन्य संस्थानों के साथ प्रतिस्पर्द्धा के चलते हैं, उन राष्ट्रवादी, संप्रदायवादी, स्वार्थी व्यक्तिवादी, हठधर्मी भावनाओं को बढ़ावा देते हैं, जो दुनिया में सबसे ज्यादा घातक मतवाद और धर्मांधता को जन्म देते हैं।

घर में स्कूल (होम स्कूल) अपनी व्यापकता के द्वारा जीवन के साथ संबंध जोड़ देता है। फसलों का मौसम के साथ संबंध मौसम विज्ञान के अध्ययन का जरिया बन जाता है। स्थानीय उद्योग और शिल्प से संबंधित तथ्यों का संकलन इतिहास का, रीति-रिवाज और धार्मिक अभिव्यक्ति, संगीत और नाटक की परम्परा का, और खासतौर से समाज के निर्माण से संबंधित वह सहकारी पक्ष जिसका विकास धीरे-धीरे होता है लेकिन जो भविष्य में विकास में बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है, यह सब मिलकर अध्ययन का माध्यम बनते हैं। सिर्फ ऐसे ही आधारों पर ग्रामीण समाज में बदलाव आ सकता है, अतीत से सबक लेकर नहीं बल्कि पुराने अनुभवों से समृद्ध होते हुए साझा हितों के लिए आगे बढ़ते हुए।

अनजाने ही इस प्राचीन सभ्यता को अपनी जड़ में ले रही नई ताकतों और संस्थानों के कारण आज तेजी से विघटित होते अतीत के सूखे अवशेषों को एक बारगी जला कर यौवन की प्रयोग-एषणा में नई उत्तेजना का संचार हो जाए तो नया सवेरा जरूर होगा।

हमारी शिक्षा ने अब तक प्रकृति के मूल नियम, जीवन के स्वाभाविक चक्र की बहुत उपेक्षा की है। जहां प्रकृति प्रत्येक विकासशील जीव के आत्मनिर्भर बनने में लगने वाले समय को कम से कम रखना चाहती है। वहीं हम स्कूल और कॉलेज के माध्यम से इस समय को अनंतकाल तक बढ़ाते जाने पर जोर देते हैं। जिस क्षण पौधे या अंडे में मां से मिलने वाले भोजन की आपूर्ति रुक जाए, भोजन की तलाश में पौधे की जड़ें और गहरी जाने लगती हैं और उसकी शाखांए और पत्तियां आसमान की तरफ बढ़ने लगती हैं, नन्हा चूजा खुद भोजन की तलाश में निकल पड़ता है। यह प्रकृति के मूल में ही निहित है कि प्रत्येक जीवित वस्तु शुरुआत से ही कुछ त्यागने, कुछ देने के लिए भी तैयार होती है और अंततः उस महान काम में संलग्न होती है जहां वह आत्म-बलिदान या अपनी ही तरह के कुछ ऐसे परिणामों को हासिल करने के लिए अपनी सेवाएं देने को तत्पर होती है, जिसका स्वयं उसे कोई प्रत्यक्ष लाभ मिले, यह जरूरी नहीं होता।

हम यह दावा नहीं करते कि घर-स्कूल हर तरह से आत्म-निर्भर होता है। ऐसा कहना भी प्रकृति के नियमों के विरुद्ध होगा। लेकिन इस कारण बच्चे को शारीरिक, मानसिक और नैतिक विकास की उसकी जरूरतों की पूर्ति करने के लिए अपनी क्षमताओं का भरपूर उपयोग करते हुए खुद अपने लिए काम करने के आनंद से वंचित रखा जाए, यह भी कोई बात नहीं है। जहां तक घर स्कूल का मकसद 'बढ़ने की आजादी' है वहीं इस बात का खतरा भी बना रहता है कि बच्चे के कंधों पर उसकी क्षमता से ज्यादा वजन तो नहीं डाल दिया गया है।

बढ़ने की आजादी, प्रयोग, साहस और रोमांच, ये सभी कल्पनाशीलता पर निर्भर करते हैं। कल्पनाशीलता दिमाग के काम करने की क्षमताओं में सबसे बड़ी देन है जिस पर व्यक्ति की प्रगति निर्भर करती है। कल्पनाशीलता को प्रकट होने के अवसर देना, उसे उड़ने के लिए पंख देना, दिमाग के बंद दरवाजों को पूरी तरह खोलना, वह सबसे महान क्षमता है जो एक व्यक्ति दूसरे को देता है। एक ऐसी

क्षमता जिस पर शिक्षा सत्र के पर्यवेक्षक को लगातार पूरा ध्यान देना होता है। कल्पना की क्षमता ही वह देन है जो खाने, शिकार और प्रजनन जैसे कार्यों में मनुष्य को अन्य पशुओं से इतना स्पष्ट अलग करती है और जो अलादीन के चिराग की तरह उसे अपने लिए खुद अपनी तरह का अलग संसार रचाने की सामर्थ्य देती है।

शिक्षा के क्षेत्र में अन्य सभी विवादों की तुलना में सबसे गहरा और कटु तनाव कल्पनाशीलता और अनुशासन के बीच के विवाद को लेकर रहा है। एक सिरे पर बच्चा है, जो अपने स्वावलंबन की सारी जिम्मेदारियों, जीविकोपार्जन से जुड़ी चिंताओं से मुक्त अपने दिमाग की उर्वर कल्पनाशीलता के पोषण के लिए लालायित है। कल्पनाशीलता जो किसी नाजुक पौधे की तरह बहुत आसानी से नष्ट की जा सकती है। यह बच्चा अनावश्यक अनुशासन की जकड़नों के विरोध में खड़ा है, जो सम्पूर्ण अराजकता के अलावा किन्हीं नियमों को नहीं मानना चाहता। दूसरे सिरे पर हैं- माता-पिता और अध्यापक- व्यावहारिक और दुनियावी लोग, जिन्हें जीवन की कठिनाइयों और श्रम का भरपूर अनुभव है, जो कानून और व्यवस्था में यकीन रखते हैं, जो निश्चित दिनचर्या और साझा जगह में यकीन रखते हैं, जिनकी कल्पनाशीलता वर्षों पहले इन्हीं व्यावहारिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए कुचली जा चुकी है, जो बच्चे को अपने अनुभव खुद अर्जित करने की कठिनाइयों से बचाना चाहते हैं।

यदि बच्चों को बढ़ने की आजादी देनी है तो उन्हें अपने नियम खुद बनाने की आजादी भी होनी चाहिए। उन्हें दूसरों के दखल और निरीक्षण से भी आजादी होनी चाहिए। उन्हें ऐसी निपट अराजकता की छूट हो जो समूची बनी-बनाई व्यवस्थाओं के लिए खतरा भी बन सकती है। इस तरह अधिकतम आजादी को बचाए रखने के लिए न्यूनतम अनुशासन को कायम करना अन्य सभी समस्याओं की तुलना में सबसे विकट समस्या बन जाती है। बच्चों को अपने लिए खुद नियम बनाने और अनुशासन निर्धारित करने की आजादी देने के लिए उनकी क्षमताओं में पूरा विश्वास और बहुत हिम्मत की जरूरत होती है। उनके साथ खड़े रह कर चीजों को ठीक करने के लिए दखलंदाजी किए बिना उन्हें गलतियां करते हुए देखते रहने की हिम्मत।

निश्चय ही नियम निर्धारित करने का एक तर्कसंगत आधार होता है। कुछ काम, जिन्हें गृह निर्माण में शामिल किया गया है और जो स्वावलंबन से गहरे जुड़े हैं, उन्हें लगभग प्रत्येक नागरिक को हर दिन करना होता है। इन कामों के ठीक तरह से किया जाना व्यक्ति ही नहीं पूरे समूह के हित में होता है। इनमें खाना बनाना, भोजन करना, बरतन और कपड़े धोना, नहाना, सफाई करना यानी; सामान्यतः शरीर और घर की देखभाल करना शामिल है। जब तक शरीर मुक्त नहीं है मन उड़ान नहीं भर सकता। इस तरह देखा जाए तो चरम अराजकता की राह में शरीर खुद एक रुकावट है। यह सारे काम सख्त अनुशासन की मदद से त्वरित और प्रभावी ढंग से पूरे किए जा सकते हैं और इस तरह आजादी के घंटों को बढ़ाया जा सकता है। बच्चों के पास इतनी समझ होती है कि वे इतने अनुशासन की जरूरत को समझ कर इनके लिए जरूरी नियम बना सकें और उन नियमों का उल्लंघन करने वालों के लिए उचित दंड निर्धारित कर सकें।

बढ़ने की आजादी, प्रयोग, साहस और रोमांच, ये सभी कल्पनाशीलता पर निर्भर करते हैं। कल्पनाशीलता दिमाग के काम करने की क्षमताओं में सबसे बड़ी देन है जिस पर व्यक्ति की प्रगति निर्भर करती है। कल्पनाशीलता को प्रकट होने के अवसर देना, उसे उड़ने के लिए पंख देना, दिमाग के बंद दरवाजों को पूरी तरह खोलना, वह सबसे महान क्षमता है जो एक व्यक्ति दूसरे को देता है।

दूसरी ओर, कार्यशाला चलाने के पीछे का मकसद ऊपर से लादे गए प्रतिबंधों से मुक्ति पाना है क्योंकि शिल्पकारी में कुशलता के अपने मानक होते हैं और इसके लिए अपनी तरह के अनुशासन की जरूरत होती है। यदि प्रयास जीवन से गहरे जुड़ा है- चाहे वह सहयोगात्मक हो, जैसा कि अक्सर होता है या व्यक्तिपरक ही क्यों न हो, पूर्ण संतुष्टि तभी मिल सकती है जब बनाने वाला अपनी पूरी क्षमता का बेहतरीन प्रदर्शन कर सके। शिक्षार्थी का आत्म-सम्मान और फिर उसे समूह का समर्थन, जिस पर वस्तु के बाजार भाव की चाशनी भी चढ़ी हो, और यह सब उनकी अपनी तरह का हो तभी पर्याप्त अनुशासन पाया जा सकता है।

इस भय से त्रस्त होकर कि वह कभी व्यवहार कुशल वयस्क नहीं बन पाएगा, हम कितनी ही बार बच्चे की कल्पनाशीलता की राह में बाधा खड़ी कर देते हैं। स्वप्न दृष्टाओं के प्रति हमारे मन में एक जन्मजात नापसंदगी होती है क्योंकि वे हमारे बने-बनाए परंपरागत ढर्रे को तोड़ देते हैं- जबकि हमारी समूची प्रगति इन्हीं कल्पनाशील लोगों की देन है। जो जरूरी है उसे समझने के साथ ही उनमें अज्ञात के अंधेरे से बाहर निकलने की छटपटाहट थी और अपनी कल्पना के नए संसार का सपना देखने और उसे रचने की हिम्मत भी। एक विद्रोही किस्म के असंतोष से निर्देशित होकर मनुष्य ज्ञान के अथाह समंदर में गोते लगाता रहा है और उसकी उर्वर कल्पनाशीलता उसे

आगे बढ़ने के लिए दिशा दिखाती रही है। लेकिन बच्चों के लिए हम इस बात पर जोर देते हैं कि वे अपने इस अभियान पर तब तक रवाना न हों जब तक कि वे उस नक्शे को ठीक से याद न कर लें जिसे हमने अपने अनुभव से उनके लिए खींचा है। इस तरह उनकी नन्ही-सी नौका रूढ़, बनावटी और कल्पनारहित कक्षा के खूंटे से बंधी एक ही जगह पर हिचकोले खाती रहती है।

मनुष्य अपनी सभी क्षमताओं के पूरे विकास के द्वारा ही अपनी वास्तविक आजादी को हासिल कर सकता है। उसे इतना तैयार होना चाहिए कि उसे स्वावलंबन की चिंता न सताए, केवल अपनी समझ और पड़ोसियों के साथ सहानुभूति के द्वारा ही वह मनुष्य समाज के एक शालीन सदस्य और जिम्मेदार नागरिक की भूमिका निभा सकता है। तटस्थता की भावना के धीमे विकास के साथ ही इस अमूर्त संसार में, जो कि आध्यात्मिक सत्य का संसार भी है, वह रचनात्मक अभिव्यक्ति के लिए अपनी जन्मजात क्षमताओं की स्वाभाविक अभिव्यक्ति के लिए भी रास्ता खोज लेता है। एक व्यक्ति, एक नागरिक और एक रचनात्मकता के प्रतिनिधि के रूप में आत्माभिव्यक्ति के द्वारा अपने सर्वश्रेष्ठ की खोज कर लेना, और निरंतर विकास के आनंद और उसकी राह की कठिनाइयों को समझना- यही सच्ची आजादी है।

यदि बच्चों को बढ़ने की आजादी देनी है तो उन्हें अपने नियम खुद बनाने की आजादी भी होनी चाहिए। उन्हें दूसरों के दखल और निरीक्षण से भी आजादी होनी चाहिए। उन्हें ऐसी निपट अराजकता की छूट हो जो समूची बनी–बनाई व्यवस्थाओं के लिए खतरा भी बन सकती है।

ऐसे में ऐसा कोई भी विषय जो बच्चे को इस खोज में जुटने के अवसर से वंचित रखता है, वह गंभीर भूल कर रहा है। शिक्षा को कई बार एक उपकरण कहा जाता है और उस पर एक कारखाने में चलने वाली प्रक्रिया की तरह विचार किया जाता है। संभवतः इसी कारण यहां तैयार होने वाले कच्चे माल, बच्चों, को इस तरह पढ़ाया जाता है मानो उन्हें एक ही मशीन से निकाले गए सांचों में ढाला गया हो। जबकि शिक्षा का अर्थ है विकास और जीवन, और स्कूल में बिताया जाने वाला समय जीवन का ऐसा समय होना चाहिए जहां बच्चे स्वयं अनुभव कर सच्ची आजादी को अर्जित कर सकें। यह मानकर कि बच्चे को आजादी के बारे में पढ़ाया जा सकता है यह मान कर हम उसे जीवन का अनुभव प्राप्त करने से ही वंचित कर देते हैं।

घर और कार्यशाला की दीवारों के परे भी एक संसार है, यहां तक कि प्रकृति के भी दायरे से बाहर, व्यक्ति का अपना संसार जहां अराजकता ही सर्वोपरि है। यह अर्मूतन और भावनाओं का संसार है। अपने हाथों की मेहनत से अपना जीवन स्वयं चला सकने और मनुष्यों के बीच अपने अस्तित्व की रक्षा कर पाने के सामर्थ्य का आत्म-विश्वास अर्जित कर लेने के बाद बच्चे और वयस्क दोनों ही एक-दूसरे इलाके में प्रवेश के लिए स्वतंत्र होते हैं, जिसकी कोई तयशुदा व्याकरण नहीं होती न कोई नियम कायदे होते हैं।

ऐसे बहुत कम बच्चे होते हैं जिन्हें यह अमूर्तन और भावनात्मक अभिव्यक्ति का संसार, यह ऊर्जा और रचनात्मक अभिव्यक्ति का संसार समझ न आता हो। हम उन्हें प्रेरित कर सकते हैं, प्रोत्साहित कर सकते हैं हम उन्हें साधन और अवसर उपलब्ध करा सकते हैं, लेकिन यदि हम उन्हें विकास की आजादी देना चाहते हैं और इसके प्रति ईमानदार हैं तो हमें इस बारे में बहुत सावधान रहना होगा कि हम उन पर अपने नियम, कायदे और कानून थोप तो नहीं रहे हैं। बचपन की ऊर्जा और कल्पनाशीलता हवा की तरह है जो अपनी मर्जी से अपने बहने की दिशा तय करती है, वह किन्हीं नियम कायदों में बंधना नहीं जानती। वह स्वतःस्फूर्त है, तभी सच्ची भी है। यानी बच्चे को गीत-संगीत, कविता, यदि वह चाहे तो नाटक और नृत्य, रंगों, रेखाओं और आकृतियों के माध्यम से स्वयं को अभिव्यक्त करने या ध्यान के माध्यम से इस अनंत के साथ संबंध जोड़ने की पूरी आजादी होनी चाहिए।

हम बच्चे को धर्म सिखा सकते हैं, यह सोचना वैसा ही है जैसे कि हम एक पेड़ को बढ़ना और हमारी पसंद के फूल खिलाना सिखा सकते हैं। हम उपयुक्त जमीन दे सकते हैं, बढ़ने में सहायक खाद डाल सकते हैं, नमी और तापमान पर कुछ हद तक नियंत्रण कर सकते हैं ताकि प्रकृति अपना काम कर सके। लेकिन बढ़ना जीवन का नियम है और पौधे के लिए क्या अच्छा है यह तय करने से पहले हमें उसके बढ़ने के लिए जरूरी सभी सिद्धांतों को पहचानना होगा। विकास के लिए मजबूर करना या बाहर से विकास को बढ़ावा देना नष्ट करने की ओर अग्रसर करना है।

जीवन को यदि जीवन होना है तो उसे जीना ही होगा। माता-पिता और अध्यापकों के द्वारा वंचना और दमन, उनके सख्त कायदे-कानून का असर बच्चों की तीसरी और चौथी पीढ़ी तक भी उनके जीवन पर असर डालता है। ◆

भाषान्तर : देवयानी